Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 13, Issue 2 | November 2025 - April 2026 | pp. 96-100

भारत छोड़ो आंदोलन में अरुणा आसफ़ अली का योगदान : एक ऐतिहासिक, वैचारिक एवं आलोचनात्मक अध्ययन

ISSN 2348-3857

डॉ. विश्राम मीना

सहायक आचार्य, इतिहास, राजकीय महाविद्यालय, बांदीकुई, दौसा (राजस्थान)

शोध सारांश

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। अनेक महिला नेताओं ने राष्ट्रीय आंदोलन को जन-आंदोलन बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अरुणा आसफ़ अली ऐसी ही एक साहसी, प्रगतिशील और क्रांतिकारी महिला थीं, जिन्होंने विशेष रूप से 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में निर्णायक भूमिका निभाई। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य भारत छोड़ो आंदोलन में अरुणा आसफ़ अली की भूमिका, उनके राजनीतिक विचारों, भूमिगत गतिविधियों, महिला नेतृत्व तथा स्वतंत्रता पश्चात उनके योगदान का ऐतिहासिक एवं आलोचनात्मक अध्ययन करना है। यह अध्ययन ऐतिहासिक शोध पद्धति पर आधारित है। इसमें प्राथमिक स्रोतों जैसे गांधीजी के पत्र, कांग्रेस दस्तावेज़, समकालीन समाचार-पत्र, संस्मरण तथा भाषणों का उपयोग किया गया है। साथ ही द्वितीयक स्रोतों के रूप में इतिहासकारों की पुस्तकों, जीवनी ग्रंथों तथा शोध आलेखों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अरुणा आसफ़ अली ने केवल गोवालिया टैंक मैदान में तिरंगा फहराकर आंदोलन का प्रतीकात्मक नेतृत्व ही नहीं किया, बल्कि भूमिगत रहकर कांग्रेस रेडियो, गुप्त पत्रिकाओं तथा जनसंपर्क माध्यमों के द्वारा आंदोलन को सक्रिय बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका व्यक्तित्व राष्ट्रवाद, समाजवाद, लोकतंत्र और महिला स्वतंत्रता का अद्भुत समन्वय था। वे गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित होते हुए भी स्वतंत्र वैचारिक दृष्टिकोण रखने वाली नेता थीं। स्वतंत्रता के बाद भी उन्होंने समाजवादी एवं वामपंथी राजनीति, पत्रकारिता तथा सामाजिक आंदोलनों में सक्रिय योगदान दिया। इस प्रकार अरुणा आसफ़ अली भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की एक ऐसी प्रेरणादायक महिला थीं, जिनका योगदान भारतीय इतिहास में स्थायी महत्व रखता है।

संकेताक्षर—*भारत छोड़ो आंदोलन, अरुणा आसफ़ अली, स्वतंत्रता संग्राम, महिला नेतृत्व, कांग्रेस रेडियो, समाजवाद*

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन आधुनिक भारत के इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक था। इस आंदोलन ने केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की चेतना ही नहीं जगाई, बल्कि भारतीय समाज में सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक परिवर्तन की प्रक्रिया को भी गति प्रदान की। इस आंदोलन की एक महत्वपूर्ण विशेषता महिलाओं की व्यापक भागीदारी थी। उन्नीसवीं शताब्दी के सामाजिक सुधार आंदोलनों ने भारतीय महिलाओं में शिक्षा, आत्मसम्मान और सामाजिक चेतना का विकास किया। बीसवीं शताब्दी में यही चेतना राष्ट्रीय आंदोलन में उनकी सक्रिय भागीदारी का आधार बनी। सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गांधी, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, विजयलक्ष्मी पंडित, उषा मेहता और अरुणा आसफ़ अली जैसी महिलाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन को जनांदोलन का स्वरूप प्रदान किया। इन महिला नेताओं में अरुणा आसफ़ अली का स्थान विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। वे केवल एक राष्ट्रवादी कार्यकर्ता नहीं थीं, बल्कि वैचारिक रूप से स्वतंत्र, साहसी और प्रगतिशील महिला भी थीं। भारत छोड़ो आंदोलन में उनका योगदान भारतीय इतिहास में अमिट है।

1942 में जब अंग्रेज़ सरकार ने कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व को गिरफ्तार कर लिया था, तब अरुणा आसफ़ अली ने मुंबई के गोवालिया टैंक मैदान में तिरंगा फहराकर अंग्रेज़ी शासन को खुली चुनौती दी। यह घटना भारत छोड़ो आंदोलन का प्रतीकात्मक आरंभ मानी जाती है। इसके बाद उन्होंने भूमिगत रहकर आंदोलन को जीवित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रस्तुत शोध-पत्र में अरुणा आसफ़ अली के जीवन, राजनीतिक चेतना, भारत छोड़ो आंदोलन में भूमिका, भूमिगत गतिविधियों, महिला नेतृत्व तथा स्वतंत्रता पश्चात उनके योगदान का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है।

शोध के उद्देश्य

- अरुणा आसफ़ अली के राजनीतिक जीवन का अध्ययन करना।
- भारत छोड़ो आंदोलन में उनके योगदान का विश्लेषण करना।
- भूमिगत आंदोलन एवं कांग्रेस रेडियो में उनकी भूमिका का मूल्यांकन करना।
- उनके वैचारिक दृष्टिकोण एवं समाजवादी झुकाव का अध्ययन करना।
- स्वतंत्रता पश्चात उनके सामाजिक एवं राजनीतिक योगदान का विश्लेषण करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध-पत्र ऐतिहासिक शोध पद्धति पर आधारित है। अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है।

प्राथमिक स्रोतों में गांधीजी के पत्र, कांग्रेस अधिवेशन के दस्तावेज़, समकालीन समाचार-पत्र, संस्मरण तथा कांग्रेस रेडियो से संबंधित अभिलेखों का अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त अरुणा आसफ़ अली के भाषणों तथा समकालीन नेताओं की टिप्पणियों का भी उपयोग किया गया है।

द्वितीयक स्रोतों में स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित इतिहासकारों की पुस्तकें, जीवनी ग्रंथ, शोध आलेख और पत्रिकाओं का उपयोग किया गया है। अध्ययन में वर्णनात्मक पद्धति के साथ-साथ विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक दृष्टिकोण को अपनाया गया है।

साहित्य समीक्षा

अरुणा आसफ़ अली के जीवन और योगदान पर अनेक इतिहासकारों और लेखकों ने अध्ययन किया है। जी.एन.एस. राघवन ने अपनी पुस्तक "अरुणा आसफ़ अली : ए कम्पैशनेट रेडिकल" में उनके राजनीतिक जीवन, वैचारिक विकास तथा भूमिगत आंदोलन का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

बिपन चंद्र ने भारत छोड़ो आंदोलन के संदर्भ में अरुणा आसफ़ अली को आंदोलन की प्रेरणादायक महिला नेता बताया है। उनके अनुसार 1942 के आंदोलन में अरुणा आसफ़ अली ने जनता के भीतर प्रतिरोध और राष्ट्रीय चेतना को सशक्त किया।

सुमित सरकार ने आधुनिक भारत के इतिहास में उन्हें राष्ट्रवादी और समाजवादी विचारधारा के मध्य सेतु के रूप में प्रस्तुत किया है। उषा मेहता ने कांग्रेस रेडियो से संबंधित अपने संस्मरणों में अरुणा आसफ़ अली की संगठनात्मक क्षमता और साहस की प्रशंसा की है।

मोहित सेन ने स्वतंत्रता पश्चात उनकी वामपंथी राजनीति तथा पत्रकारिता संबंधी योगदान का विश्लेषण किया है। वहीं शाइस्ता इकरामुल्लाह ने उनके व्यक्तित्व को प्रगतिशील, संवेदनशील और राष्ट्रवादी बताया है।

हालाँकि अधिकांश अध्ययन वर्णनात्मक प्रकृति के हैं। अरुणा आसफ़ अली के योगदान का आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित है। प्रस्तुत शोध-पत्र इसी कमी को दूर करने का प्रयास करता है।

प्रारंभिक जीवन एवं राजनीतिक चेतना

अरुणा आसफ़ अली का जन्म 16 जुलाई 1909 को एक बंगाली ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता उपेंद्रनाथ गांगुली शिक्षित और उदार विचारों वाले व्यक्ति थे। प्रारंभिक शिक्षा नैनीताल में प्राप्त करने के बाद उनमें स्वतंत्र विचारधारा का विकास हुआ।

वर्ष 1928 में उन्होंने प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी और वकील आसफ़ अली से विवाह किया। यह विवाह उस समय सामाजिक दृष्टि से अत्यंत साहसिक माना गया, क्योंकि यह हिंदू-मुस्लिम विवाह था। उस समय सांप्रदायिक तनाव का वातावरण था और समाज के एक वर्ग ने इस विवाह का विरोध किया।

महात्मा गांधी ने इस विवाह को हिंदू-मुस्लिम एकता का प्रतीक माना। हालांकि अरुणा का मानना था कि उनका विवाह सांप्रदायिक प्रतीकवाद के कारण नहीं, बल्कि पारस्परिक बौद्धिक निकटता और समान रुचियों के कारण हुआ।

आसफ़ अली ने अरुणा को अनेक राजनीतिक और ऐतिहासिक पुस्तकों से परिचित करवाया। विशेष रूप से वीर सावरकर की पुस्तक "1857 का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम" ने उनके राजनीतिक विचारों को प्रभावित किया। इस पुस्तक ने उनमें राष्ट्रीय चेतना और अंग्रेज़ी शासन के प्रति विरोध की भावना को सुदृढ़ किया।

नमक सत्याग्रह के दौरान अरुणा आसफ़ अली ने सक्रिय भाग लिया। उनके भाषणों और राजनीतिक गतिविधियों के कारण अंग्रेज़ सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लाहौर महिला जेल भेज दिया। जेल में रहते हुए वे 'भगत सिंह ज़िंदाबाद' के नारे लगाती थीं, जिससे उनकी क्रांतिकारी चेतना का परिचय मिलता है।

यहीं से उनके राजनीतिक जीवन की सक्रिय शुरुआत हुई। वे धीरे-धीरे कांग्रेस के समाजवादी और उग्रवादी विचारों के निकट आती गईं।

भारत छोड़ो आंदोलन की पृष्ठभूमि

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार ने भारतीय नेताओं से बिना परामर्श लिए भारत को युद्ध में शामिल कर दिया। इससे भारतीय नेताओं में असंतोष उत्पन्न हुआ। भारतीय जनता पहले से ही औपनिवेशिक शोषण, आर्थिक संकट और राजनीतिक दमन से परेशान थी।

1942 में क्रिप्स मिशन भारत आया, किंतु उसका प्रस्ताव भारतीय नेताओं को स्वीकार्य नहीं हुआ। कांग्रेस का मानना था कि अंग्रेज़ सरकार वास्तविक सत्ता हस्तांतरण के प्रति गंभीर नहीं है। क्रिप्स मिशन की विफलता के बाद कांग्रेस ने निर्णायक संघर्ष का मार्ग अपनाने का निर्णय लिया।

8 अगस्त 1942 को मुंबई में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के अधिवेशन में "भारत छोड़ो प्रस्ताव" पारित किया गया। महात्मा गांधी ने "करो या मरो" का नारा दिया। यह नारा भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का प्रेरणास्रोत बन गया।

अंग्रेज़ सरकार ने आंदोलन को कुचलने के उद्देश्य से तत्काल कार्रवाई करते हुए गांधीजी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, मौलाना आज़ाद सहित अधिकांश राष्ट्रीय नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। अंग्रेज़ी शासन का उद्देश्य आंदोलन को प्रारंभ होने से पहले ही समाप्त करना था, किंतु ऐसा नहीं हो सका।

भारत छोड़ो आंदोलन में अरुणा आसफ़ अली की भूमिका

9 अगस्त 1942 को अरुणा आसफ़ अली ने मुंबई के गोवालिया टैंक मैदान में कांग्रेस का तिरंगा फहराया। उस समय धारा 144 लागू थी और सभा को अवैध घोषित किया जा चुका था। पुलिस दमन और सरकारी प्रतिबंधों के बावजूद उन्होंने ध्वजारोहण किया।

यह घटना भारत छोड़ो आंदोलन का प्रतीकात्मक आरंभ मानी जाती है। अरुणा आसफ़ अली के इस साहसिक कदम ने जनता में नई ऊर्जा और प्रतिरोध की भावना उत्पन्न की।

उनके नेतृत्व का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह था कि उन्होंने आंदोलन को केवल प्रतीकात्मक स्तर पर सीमित नहीं रखा, बल्कि जनता को सक्रिय प्रतिरोध के लिए प्रेरित किया। अनेक स्थानों पर छात्रों, युवाओं और महिलाओं ने उनके नेतृत्व से प्रेरणा लेकर आंदोलन में भाग लिया।

ब्रिटिश सरकार ने उन्हें गिरफ्तार करने के प्रयास किए, किंतु वे भूमिगत हो गईं। अंग्रेज़ों ने उनकी संपत्ति जब्त कर ली, फिर भी उन्होंने आंदोलन जारी रखा।

अरुणा आसफ़ अली का यह संघर्ष भारतीय महिला नेतृत्व की एक नई परंपरा का प्रतीक था। वे केवल आंदोलन की सहभागी नहीं थीं, बल्कि उसकी सक्रिय संचालक थीं।

भूमिगत आंदोलन और कांग्रेस रेडियो

अरुणा आसफ़ अली का भूमिगत जीवन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का अत्यंत महत्वपूर्ण अध्याय है। उन्होंने भूमिगत रहकर आंदोलन को जीवित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उन्होंने डॉ. राम मनोहर लोहिया और उषा मेहता के साथ मिलकर कांग्रेस रेडियो के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह गुप्त रेडियो अंग्रेज़ी सरकार के दुष्प्रचार का प्रभावी प्रतिरोध था। इसके माध्यम से जनता तक राष्ट्रीय संदेश पहुँचाए जाते थे।

कांग्रेस रेडियो से प्रसारित संदेशों ने आंदोलन को निरंतरता प्रदान की। जब अंग्रेज़ सरकार ने प्रेस और सार्वजनिक सभाओं

पर प्रतिबंध लगा दिया था, तब यह रेडियो स्वतंत्रता आंदोलन की आवाज़ बन गया।

अरुणा आसफ़ अली लगातार स्थान बदलती रहती थीं, जिससे ब्रिटिश पुलिस उन्हें गिरफ्तार नहीं कर सकी। उनका भूमिगत जीवन साहस, संगठनात्मक क्षमता और राजनीतिक प्रतिबद्धता का उत्कृष्ट उदाहरण था।

उन्होंने 'इंक़लाब' नामक पत्रिका के माध्यम से भी आंदोलन को वैचारिक दिशा प्रदान की। यह पत्रिका अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध प्रतिरोध की भावना को मजबूत करने का माध्यम बनी।

भूमिगत जीवन के दौरान उन्होंने बंगाल अकाल जैसी त्रासदियों को भी निकट से देखा। इन अनुभवों ने उनके भीतर सामाजिक न्याय और समाजवादी विचारधारा के प्रति गहरी प्रतिबद्धता विकसित की।

गांधीजी से मतभेद और वैचारिक स्वतंत्रता

महात्मा गांधी भूमिगत राजनीति के समर्थक नहीं थे। उनका मानना था कि स्वतंत्रता आंदोलन खुली और अहिंसक राजनीतिक गतिविधियों पर आधारित होना चाहिए।

1944 में गांधीजी ने अरुणा आसफ़ अली को पत्र लिखकर आत्मसमर्पण करने की सलाह दी। गांधीजी ने उनके साहस की प्रशंसा करते हुए उनके स्वास्थ्य की चिंता व्यक्त की।

किन्तु अरुणा आसफ़ अली ने आत्मसमर्पण से इंकार कर दिया। उनका मानना था कि आत्मसमर्पण राष्ट्रीय स्वाभिमान और व्यक्तिगत सम्मान के विरुद्ध होगा।

यह प्रसंग दर्शाता है कि वे गांधीजी का सम्मान करती थीं, किंतु वैचारिक रूप से स्वतंत्र निर्णय लेने में सक्षम थीं। यही विशेषता उन्हें अन्य महिला नेताओं से अलग बनाती है।

उनकी वैचारिक स्वतंत्रता का प्रभाव उनके राजनीतिक जीवन में भी दिखाई देता है। वे समय के साथ समाजवादी और वामपंथी विचारधारा के निकट आती गईं।

महिला नेतृत्व और अरुणा आसफ़ अली

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका को लंबे समय तक केवल सहयोगात्मक दृष्टि से देखा गया, किंतु अरुणा आसफ़ अली का व्यक्तित्व इस धारणा को चुनौती देता है।

वे केवल प्रतीकात्मक महिला नेता नहीं थीं, बल्कि आंदोलन की रणनीतिक और सक्रिय संचालक थीं। उन्होंने यह सिद्ध किया कि महिलाएँ राजनीतिक संघर्षों में निर्णायक भूमिका निभाने में सक्षम हैं।

उनका नेतृत्व भारतीय महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बना। उन्होंने महिलाओं में राजनीतिक चेतना, आत्मविश्वास और स्वतंत्र पहचान की भावना को मजबूत किया।

नारीवादी दृष्टिकोण से देखा जाए तो अरुणा आसफ़ अली का जीवन भारतीय महिलाओं की स्वतंत्र राजनीतिक सक्रियता का महत्वपूर्ण उदाहरण है। उन्होंने विवाह, मातृत्व और सामाजिक बंधनों से परे अपनी स्वतंत्र राजनीतिक पहचान स्थापित की।

स्वतंत्रता पश्चात भूमिका

स्वतंत्रता के बाद अरुणा आसफ़ अली कांग्रेस छोड़कर सोशलिस्ट पार्टी से जुड़ गईं। बाद में वे कम्युनिस्ट पार्टी के निकट आईं और वामपंथी विचारधारा से प्रभावित रहीं। उन्होंने 'पैट्रियट' समाचार-पत्र और 'लिंक' पत्रिका के प्रकाशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ये दोनों प्रकाशन प्रगतिशील और लोकतांत्रिक विचारों के महत्वपूर्ण माध्यम बने। वे कांग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी के बीच वैचारिक संवाद की महत्वपूर्ण कड़ी थीं। उनकी राजनीति का केंद्र सामाजिक न्याय, लोकतंत्र और समानता था। वर्ष 1958 में वे दिल्ली नगर निगम की पहली महिला महापौर बनीं। इस पद पर रहते हुए उन्होंने नागरिक सुविधाओं और सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए।

उन्हें 1965 में "लेनिन शांति पुरस्कार", 1992 में "पद्म विभूषण" तथा 1997 में मरणोपरांत "भारत रत्न" से सम्मानित किया गया। ये सम्मान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक जीवन में उनके योगदान की स्वीकृति थे।

निष्कर्ष

अरुणा आसफ़ अली भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की महान क्रांतिकारी महिला थीं। भारत छोड़ो आंदोलन में उनका नेतृत्व भारतीय इतिहास की अमूल्य धरोहर है। उन्होंने केवल तिरंगा फहराकर प्रतीकात्मक विरोध ही नहीं किया, बल्कि भूमिगत रहकर आंदोलन को संगठित और सक्रिय बनाए रखा। उनका संघर्ष यह सिद्ध करता है कि महिलाएँ केवल सहयोगी नहीं, बल्कि आंदोलन की निर्णायक नेता भी हो सकती हैं। वे राष्ट्रवाद, समाजवाद, नारी स्वतंत्रता तथा लोकतांत्रिक मूल्यों का समन्वय थीं। उनकी भूमिगत गतिविधियों, कांग्रेस रेडियो,

जनसंपर्क और वैचारिक दृढ़ता ने स्वतंत्रता आंदोलन को जीवित बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी तुलना यदि समकालीन महिला नेताओं से की जाए, तो स्पष्ट होता है कि वे अधिक उग्र, वैचारिक रूप से स्वतंत्र और संघर्षशील नेता थीं। वे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिला नेतृत्व, वैचारिक स्वतंत्रता और राजनीतिक साहस का अद्वितीय उदाहरण हैं।

आज अरुणा आसफ़ अली भारतीय महिलाओं तथा युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। उनका जीवन साहस, त्याग, राष्ट्रवाद, समाजवाद और वैचारिक स्वतंत्रता का उत्कृष्ट उदाहरण है। स्वतंत्रता के बाद भी उन्होंने लोकतांत्रिक मूल्यों, समाजवाद और सामाजिक न्याय के लिए निरंतर कार्य किया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में उनका योगदान सदैव सम्मान और गौरव के साथ स्मरण किया जाएगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. चंद्र, बिपन, भारत का स्वतंत्रता संग्राम, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 2005, पृ.सं. 512-518
2. राघवन, जी.एन.एस., अरुणा आसफ़ अली : ए कम्पैशनेट रेडिकल, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 1996, पृ.सं. 12-95
3. सरकार, सुमित, आधुनिक भारत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011, पृ.सं. 389-396
4. गांधी, मोहनदास करमचंद, महात्मा गांधी संकलित वाङ्मय, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, खंड-78, 1979, पृ.सं. 233-236
5. नेहरू, जवाहरलाल, जवाहरलाल नेहरू चयनित रचनाएँ, जवाहरलाल नेहरू स्मारक निधि, नई दिल्ली, खंड-14, 1988, पृ.सं. 412-415
6. लोहिया, राम मनोहर, भारत छोड़ो आंदोलन के दस्तावेज, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1969, पृ.सं. 118-126
7. मेहता, उषा, कांग्रेस रेडियो की कहानी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, मुंबई, 1994, पृ.सं. 67-74
8. सेन, मोहित, एक यात्री और मार्ग, रूपा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, पृ.सं. 144-152
9. सावरकर, विनायक दामोदर, 1857 का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, वीर सावरकर प्रकाशन, मुंबई, 1947, पृ.सं. 210-225
10. चंद, तारा, भारत में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली, खंड-4, 1972, पृ.सं. 322-330
11. इकरामुल्लाह, शाइस्ता, पर्दे से संसद तक, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन, 1963, पृ.सं. 98-105
12. अली, अरुणा आसफ़, भारतीय महिलाओं का पुनर्जागरण, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1984, पृ.सं. 45-93